अर्धमागधी आगम साहित्य का इतिहास

इकाई - 3 मूल सूत्र

Q. अर्धमागधी आगम साहित्य में मूल सूत्र का विवेचन करें।

Ans-- अर्धमागधी आगम साहित्य में मूलसूत्र → मूल सूत्रों में साधुजीवन के मूलभूत नियमों का विवेचन पाया जाता है।

मूल सूत्र चार हैं। जो इस प्रकार है। (1) उत्तराध्ययन (2) आवस्सय (आवश्यक) (3.) दसवेयालिय (दशवैकालिक) (4.) पिंडणिज्जुति (पिंडनिर्युक्ति)

(1) उत्तराध्ययन सूत्र → यह धार्मिक काव्य ग्रन्थ है। डा० विण्टरनित्स ने इस प्रकार के साहित्य को श्रमण काव्य कहा है और इसकी तुलना धम्मपद, महाभारत एवं सुत्तनिपात से की है। भगवान महावीर ने अपने जीवन के उत्तर काल में निर्वाण से पूर्व जो उपदेश दिये थे, उन्ही का संकलन इस ग्रन्थ में किया गया है 'उत्तराध्ययन' शब्द के अर्थ पर विचार करने के लिये इस शब्द की व्युत्पत्ति को समझ लेना आवश्यक है।

यह शब्द उत्तर और अध्ययन इन दो शब्दों के योग से बना है। उत्तर शब्द के दो अर्थ हैं → प्रधान और अन्य पश्चाद्भावी प्रथम अर्थ के अनुसार धर्मसम्बन्धी एक से एक बढ़कर अध्ययन जिसमें हो, वह ग्रन्थ उत्तराध्ययन कहलायेगा। द्वितीय अर्थ के अनुसार पश्चात पढ़ा जानेवाला ग्रन्थ उत्तराध्ययन कहलायेगा नियुक्ति की एक गाथा है।

कम उत्तरेज पगयं आयारस्सेव उपरिभइं तु।
तम्हा उ उत्तरा खलु अज्झयण हुंति णायव्वा
अर्थात् = जिसके ये अध्ययन आचाराङ्ग के उत्तरकाल में पढ़े जाते थे, इसी कारण इनकी उत्तर संज्ञा है।
वर्तमान में दशवैकालिक सूत्र के पश्चात् इस सूत्र के अध्ययन की प्रथा प्रचलित हो रही है।

अतः इसका उत्तराध्ययन यह नाम सार्थक है

(2) आवस्सय (आवश्यक) → यह मूल सूत्र का दूसरा सूत्र है - नित्यकर्म के अन्तर्गत सामायिक, चतुर्विंशति-स्तव, वन्दना, प्रतिक्रमण, कायोत्सर्ग और प्रत्याख्यान ये छः क्रियाएँ बतलायी गयी है। इस सूत्र में इन्ही छह नित्यकर्मों का प्रतिपादन किया गया है। प्रत्येक श्रमण के लिए उक्त छहों क्रियाएँ आवश्यक है, इसी कारण इसका नाम आवश्यक है।

(3) दस वेयालिय (दशवैकालिक) → यह मूलसूत्र का तीसरा सूत्र है। काल के छोड़ विकाल अर्थात, सन्ध्या समय में इनका अध्ययन किया जाता है, इसलिए यह ग्रन्थ दशवैकालिक कहलाता है। इसके रचयिता शय्यंभव है इस ग्रन्थ में दस अध्ययन है। इस इन सभी अध्ययनों का विषय मुनि का आचार है। इस पद्यबद्ध रचना में उपमा, उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकार भी आये है। उत्तराध्ययन के समान यह भी श्रमण काव्य है। इसके प्रथम अध्ययन में साधक के लिए आवश्यक मधुरी भोजन वृत्ति का विवेचन किया गया है। यहाँ द्रुम पुष्प और मधुकर उपमान है और यथाकृत आहार और श्रमण उपमेय है। इसमें श्रमण को भ्रामरी वृत्ति द्वारा आजीविका प्राप्त का संकेत किया गया है।

Scanned with CamScanner

(4) पिंडणिज्जुति (पिण्डनियुक्ति) – यह मूल सूत्र का चौथा सूत्र है, पिण्ड अर्थात मुनि के ग्रहण करने योग्य आहार। इसमें मुनि के ग्रहण करने योग्य आहार का विवेचन किया गया है। इसमें 671 गाथाएँ हैं और आठ अधिकार हैं। इसमें मुनि का आहार का विवेचन करते हुए कहा गया है कि दही मथती हुई, आटा पीसती हुई, चावल कूटती हुई, इस प्रकार भोजन के स्वाद के लिए ~~भिक्षा~~ भिक्षा में प्राप्त भोजन को ग्रहण करना संयोजन दोष है। आहार के प्रमाण का उल्लंघन करना प्रमाण दोष है। सुपक्व भोजन के प्रति आसक्ति दिखलाना अंगार दोष और अपक्व भोजन की निन्दा करना धूमदोष है। संयमपालन, प्राणधारण एवं धर्मचिन्तन का ~~ध्यान~~ ध्यान न रखकर शुद्धता के हेतु भोजन करना कारण दोष है।

नियुक्त आगमों की सबसे प्राचीन टीकाओं का नाम है और इनके कर्ता भद्रबाहु माने जाते हैं। प्रस्तुत - पिण्डनियुक्ति यथार्थतः दशवैकालिक के अन्तर्गत पिण्ड एषणा नामक पाँचवे अध्ययन की प्राचीन टीका है। जिसको अपने विषय के महत्व और विस्तार के कारण आगम में स्वतन्त्र स्थान प्राप्त हो गया है।

वास्तव में ~~का~~ उपर्युक्त चार मूल सूत्रों में उत्तराध्ययन और दशवैकालिक ये दो सूत्र ग्रन्थ हैं। महत्वपूर्ण है।